22

नवअन्वेषित हरिहर प्रतिमा

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार यादव

कला सौन्दर्यबोध एवं धार्मिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। इनमें विचारों, भावनाओं व परम्पराओं के साथ-साथ धार्मिक सहिष्णुता का समन्वयवादी स्वरूप भी दृष्टिगत होता है। तत्कालीन समाज में विविध धार्मिक मतमतान्तरों के बीच सद्भावना को प्रेषित करने के लिये समाज के विभिन्न वर्गों के अतिरिक्त शिल्पकारों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। हरिहर प्रतिमा का अंकन इसी धार्मिक सहिष्णुता की परिणति है, जिसके निर्माण का मुख्य आधार शैव एवं वैष्णव सम्प्रदायों में धार्मिक समन्वय एवं एकात्मकता को दर्शाना था।

प्रस्तुत शोध पत्र जौनपुर जिले के पुरास्थल चतुर्भुजपुर (अक्षांश 25°32'21" उत्तर, देशान्तर 82°54'32" पूर्व) से प्राप्त हरिहर की प्रतिमा के अध्ययन पर आधारित है। यह प्रतिमा बलुआ प्रस्तर पर उकेर कर बनायी गयी है, जो लगभग 75×55 सेंटीमीटर आकार की है। इसमें पंचरथ पादपीठ के उपर उत्फुल्ल कमल पर स्थानक मुद्रा में हरिहर प्रदर्शित हैं। इनका दाहिना भाग 'हर' (शिव) तथा बायाँ 'हरि' (विष्णु) से संयुक्त है। यह अंकन *विष्णुधर्मोत्तर पुराण*[1], *मत्स्य पुराण*[2], *सुप्रभेदागम*[3], *शिल्परत्न*[4] एवं *देवतामूर्तिप्रकरण*[5] में उल्लिखित हरिहर के प्रतिमाशास्त्रीय लक्षणों के अनुरूप है। चतुर्भुजी हरिहर की दो भुजाएँ खण्डित हो गयी हैं तथा दो भुजाओं में दाहिने भुजा में संभवतः त्रिशूल तथा बायीं में शंख हैं। बायीं तरफ कन्धे के बगल में अलंकृत चक्र का अंकन किया गया है। हरिहर के बाल घुंघराले हैं, जो कन्धे पर बिखरे हुये हैं। इन्हें कानों में कुण्डल, गले में द्विअवली हार, हाथों में भुजबन्ध, यज्ञोपवीत, कमर पर कटिसूत्र तथा कन्धे से घुटने तक लटकती हुयी वनमाला धारण किये हुए दिखलाया गया है। आभूषणों के मध्य वक्षस्थल में श्रीवत्स के चिह्न को कुशलतापूर्वक उकेरा गया है। हरिहर के मस्तक के दाहिने तरफ ऊपरी हिस्से में अर्द्धचन्द्र का अंकन है। हर को चन्द्रशेखर भी कहा गया है, क्योंकि उनके जटा-जूट में चन्द्रमा स्थित रहता है। हरिहर के सिर पर जिस वस्तु का अंकन किया गया है, उसकी ठीक-ठीक पहचान संभव नहीं हो सकी है। ऐसी संभावना व्यक्त की जा सकती है कि यह अंकन कदाचित् देवी गंगा का हो। हरिहर का प्रभामण्डल वृत्ताकार है, जिसके उकेर कर बनाया गया है। हरि तथा हर के चेहरे पर सौम्य भाव तथा उनके अर्धनिमीलित नेत्र शिल्पकार की भावात्मक अभिव्यक्ति कहे जा सकते हैं। हरिहर के स्वरूप का निर्धारण, तालमान, अंगसौष्ठव व अलंकरणों का सामंजस्य कला एवं भाव दोनों पक्षों को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करता है।

हरिहर प्रतिमा में शैव एवं वैष्णव धर्म से संबंधित विविध विषयों का अंकन किया गया है। दाहिनी ओर शैव धर्म से संबंधित विषयों में प्रतीकात्मक अंकनों, पौराणिक आख्यानों, शिव परिवार के सदस्यों, गणों एवं उपासक का अंकन है। वही बायीं ओर वैष्णव धर्म से संबंधित कथानकों में विष्णु के अवतारों, उनके वाहन, लक्ष्मी एवं उपासिका का अंकन किया गया है।

22.1: हरिहर, चतुर्भुजपुर, जौनपुर, 11वीं शती ई.

परिकर में देव एवं देवता आकृतियाँ

हरिहर प्रतिमा के सबसे ऊपरी भाग में दाहिनी ओर पाँच शिवलिंगों का अंकन किया गया है। पाँचों शिवलिंग एकरुपता लिये हुए हैं, जो एक कमलरूपी पादपीठ के ऊपर स्थापित किये गये हैं। शिवलिंग के दाहिनी ओर खण्डित होने के कारण दो आकृतियों का अंकन स्पष्ट नहीं है। नीचे परिकर की आकृतियों का उल्लेख किया गया है।

अंधिकारि–दाहिने परिकर के आन्तरिक शाखा में अलंकृत स्तम्भ पर अंधकासुर–वध का पौराणिक दृश्य उत्कीर्ण है। इसमें प्रत्यालीढ मुद्रा में खड़े द्विभुजी शिव के दोनों हाथों में त्रिशूल है, जिस पर अन्धकासुर की आकृति है।

कार्त्तिकेय–अंधकारि आकृति के ठीक नीचे स्तम्भ पर कार्त्तिकेय का अंकन है। द्विभुजी कार्त्तिकेय के बायें हाथ में शूल (शक्ति?) तथा दाहिने हाथ में फल है, जो कार्त्तिकेय मूर्त्तियों की विशिष्टता रही है। कार्त्तिकेय के पैरों के मध्य मयूर का अंकन है।

पार्वती–हरिहर प्रतिमा के नीचे के भाग में कार्त्तिकेय आकृति के ठीक नीचे द्विभुजी पार्वती का अंकन किया गया है। पार्वती के कानों में कुण्डल, गले में हार, हाथों में भुजबंध व कंकण तथा कमर में कटिसूत्र शोभित है। लोलमुद्रा में पार्वती के अर्धउन्मीलित नेत्र, मुख पर स्मित हास्य व शान्त मुद्रा अवलोकनीय है।

नन्दी–हरिहर प्रतिमा के निचले हिस्से में हर (शिव) के पैरों के समीप वृषरूप में शिव के वाहन नन्दी का अंकन है। अपने इष्टदेव की ओर गर्दन उठाकर देखने वाले (देववीक्षणतत्परः) नन्दी के गले की घण्टिका मनमोहक रूप में प्रदर्शित है।

उपासक–नन्दी के ठीक नीचे करबद्ध पुरुष उपासक का अंकन है। कदाचित् यह प्रतिमा का निर्माणकर्ता उपासक है।

हरिहर प्रतिमा में दाहिनी ओर हर (शिव) के बाह्य शाखा में सबसे ऊपरी हिस्से में अंकित आकृति खण्डित है। उसके ठीक नीचे ललितासन में शिव के ही किसी रूप का अंकन किया गया है, जिसकी पहचान संभव नहीं हो सकी है।

व्याल–हर प्रतिमा के बाह्य शाखा में व्याल का अंकन है, जो संभवतः सर्पव्याल है। इस प्रकार के व्याल का प्रमाण साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों में मिलता है।[6]

गणेश–हर के बाह्य शाखा में गणेश का अंकन किया गया है। आसनस्थ गणेश द्विभुजी हैं, जिनकी शुंडा वामावर्त है। वामन एवं लम्बोदर गणेश एकदंत हैं। उनके गले में हार, हाथों में कंकण एवं कटि में मेखला शोभायमान है। गणेश का वाहन मूषक उनके पैरों के मध्य में स्थित है।

महाकाल–गणेश के ठीक नीचे शिव के गण महाकाल का अंकन किया गया है। स्थानक द्विभुजी महाकाल के दाहिने हाथ में कपालपात्र है तथा बायाँ हाथ पार्वती प्रतिमा के कारण ढँका हुआ है। महाकाल की आँखें बड़ी-बड़ी भयानक और उभरी हुई हैं। अत्यन्त भयानक मुख में बड़े-बड़े नासापुट है। मूँछें ऊपर की ओर उठी हुयी हैं। कानों का कुण्डल उनके कन्धे तक लटक रहा है। गले में ऊर्ध्वबंध (हार) एवं घुटने तक लटकती हुई वनमाला सुशोभित है।

परिकर में वैष्णव धर्म से संबंधित विषयों का अंकन

हरिहर प्रतिमा के बायें परिकर में हरि (विष्णु) से संबंधित विषयों का अंकन किया गया है, जिनमें विष्णु के दशावतार, उनकी शक्ति, वाहन गरुड एवं अनुचर प्रमुख हैं। दस अवतारों में क्रमशः ऊपर से नीचे की ओर मत्स्य, कच्छप, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, बलराम, बुद्ध एवं कल्कि का अंकन हुआ है। पीठिका पर लक्ष्मी, गरुड एवं उपासिका की आकृतियाँ भी उत्कीर्ण हैं।

प्रतिमा के शीर्ष भाग पर पंचलिंगों की बायीं ओर कमलपीठिका पर मत्स्यविग्रह तथा कच्छप का अंकन किया गया है।

बायें परिकर की आन्तरिक शाखा में वराह को आलीढ मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। द्विभुजी वराह की बायीं केहुनी पर नारी रूप में भूदेवी का अंकन है। दाहिना हाथ कट्यवलम्बित है। नृ-वराह मुख उठाकर पृथ्वी की ओर देखते प्रतीत हो रहे हैं।

आन्तरिक शाखा में ही वराह के बायीं ओर हिरण्यकशिपु के उदर विदीर्ण करने की मुद्रा में नरसिंह का अंकन किया गया है। द्विभुजी नरसिंह का दाहिना पैर मुड़ा हुआ है तथा बायाँ पैर नीचे की ओर लटकता दिखाया गया है। बायें परिकर की बाह्य शाखा में द्विभुजी वामन को छत्र धारण किये हुए दर्शाया गया है। वामन के नीचे की प्रतिमा खण्डित होने के कारण स्पष्ट नहीं है।

हरिहर प्रतिमा के आन्तरिक शाखा में हरि के चक्र के ठीक नीचे परशुराम का अंकन किया गया है। जटामुकुट युक्त द्विभुजी परशुराम के दाहिने हाथ में परशु स्पष्ट है। परशुराम को एक आसन पर बैठे हुए दिखलाया गया है।

हरिहर प्रतिमा के बाह्य शाखा में सिंह व्याल का अंकन किया गया है। प्रतिमा के बाह्य शाखा में सिंह व्याल के ठीक नीचे ललितासन में बलराम को दिखलाया गया है। द्विभुजी बलराम सर्पफण धारण किये हुए हैं, जिनके बायें हाथ में हल तथा दाहिने हाथ में पात्र हैं। बलराम के ठीक नीचे ध्यान मुद्रा में पद्मासनासीन बुद्ध का अंकन किया गया है। बाह्य शाखा में सबसे निचले हिस्से में कल्कि का अंकन है। खण्डित होने के कारण केवल अश्व एवं खड्ग ही स्पष्ट हैं।

हरिहर प्रतिमा के आन्तरिक शाखा में हरि के शंखयुक्त हाथ के ठीक नीचे स्थानक मुद्रा में गरुड का अंकन किया गया है। उन्हें कानों में कुण्डल, गले में हार, यज्ञोपवीत, कमर में मेखला तथा दाहिने हाथ में सर्प धारण किये दिखलाया गया है।

लक्ष्मी–हरिहर प्रतिमा के आन्तरिक शाखा में गरुड के बायीं तरफ लोलमुद्रा में द्विभुजी लक्ष्मी का अंकन है। जटाजूट धारण किये देवी के कानों में कुण्डल, गले में हार, हाथों में भुजबंध तथा कमर में कटिसूत्र का आलेखन किया गया है। हरिहर के बायीं तरफ पैरों के पास करबद्ध मुद्रा में उपासिका का अंकन है।

निष्कर्ष–प्रस्तुत हरिहर प्रतिमा आलेखन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। हरिहर के बायें परिकर में हरि से संबंधित दशावतारों को प्रमुखता से अंकित किया गया है। पूर्वमध्यकालीन मूर्तियों में विष्णु के दशावतारों का अंकन सामान्य बात है, किन्तु हरिहर प्रतिमा में विष्णु के परिकर देवता के रूप में इस प्रकार का अंकन अपेक्षाकृत कम हुआ है। यहाँ आठवें अवतार के रूप में कृष्ण को न दिखलाकर बलराम को दिखलाया गया है। प्रस्तुत प्रतिमा में

मत्स्य, कच्छप, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, बलराम, बुद्ध एवं कल्कि का अंकन तो स्पष्ट है, लेकिन राम की पहचान स्पष्ट नहीं है। हरिहर प्रतिमा में परम्परानुसार हरि एवं हर की शक्तियों एवं वाहनों का अंकन किया गया है, जिनमें क्रमशः लक्ष्मी एवं पार्वती तथा गरुड़ व नन्दी हैं। हरि परिकर में सिंहव्याल तथा हर परिकर में सर्पव्याल का अंकन महत्वपूर्ण है। हरिहर प्रतिमा के हर परिकर में शिव के लीलास्वरूप अंधकारि, उनके परिवार देवताओं गणेश, कार्त्तिकेय, पार्वती एवं गण महाकाल तथा नन्दी का अंकन मुख्य है। साथ ही शिव के मस्तक के ऊपर बायीं ओर एक पंक्ति में बने हुए पंचलिंग विशेष महत्वपूर्ण है। पंचलिंगों का इस प्रकार एक पंक्ति में अंकन मध्य भारत की मध्यकालीन उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में तो सामान्य है किन्तु हरिहर प्रतिमा में इस प्रकार का अंकन अब तक ज्ञात नहीं है। शैव सम्प्रदाय में शिव के साथ पाँच के अंक का अपना महत्त्व है, यथा शिव के नाम पंचानन, पंचपिण्डनाथ, शिव का पंचाक्षर मन्त्र 'नमः शिवाय', उनके पांच मुख (सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष तथा ईशान) आदि। निश्चित रूप से यह हरिहर प्रतिमा शैव-वैष्णव सिद्धान्तों व मान्यताओं की एकता की प्रतीक होने के साथ-साथ इस क्षेत्र में कला एवं धर्म की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

संदर्भ एवं टिप्पणी

1. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 108.35, *कार्यो हरिहरस्यापि दक्षिणार्धं सदाशिवं। वामार्धे हृशीकेशश्वेतनीलाकृतिः क्रमात्।*
2. मत्स्य पुराण, 260.22-27
3. सुप्रभेदागम, 34
4. शिल्परत्न, 22.15
5. श्रीकृष्ण जुगन, देवतामूर्तिप्रकरणम्, दिल्ली, 2003, *शिवमूर्तिशिवलिंग लक्षणाधिकाराख्यः* 4.30-31, पृ. 187
   कार्यो हरिहरस्यापि दक्षिणार्धे शिवः सदा। हृषीकेशश्च वामार्धे श्वेतनीलाकृती क्रमात् ।।30।।
   वरं त्रिशूलंचक्राब्जधारिणो बाहुकाः क्रमात्। दक्षिणेवृषभः पार्श्वे वामे विहगराडिति।।31।।
6. ढाकी, एम. ए. 'द व्यल फिगर आन द मेडिवल टैम्पल ऑफ इण्डिया', पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी, 1956, पृष्ठ-25, चित्र-28, सर्पव्याल, जगदम्बा टैम्पल, खजुराहो।